**मॉड्यूल 6: बच्चों की वैकल्पिक देखरेख**

**सत्र 1: वैकल्पिक देखरेख से परिचय**

अवधि: 5:07 मिनट

आईए इस बात को जानें और समझें कि संस्थागत देखरेख अंतिम विकल्प क्यों होना चाहिए?

वैश्विक स्तर पर यह माना गया है कि बच्चे को जो अनुकूल देखरेख एक परिवार दे सकता है उस तरह की देखभाल का विकल्प सबसे अच्छे संस्थान भी नहीं दे सकते हैं।

अध्ययनों और अनुभवों से यह देखा गया है कि जो बच्चा पारिवारिक देखरेख से वंचित रह जाता है और मानवीय भावनाओं से विहीन एक बड़े संस्थान में रख दिया जाता है उनमें, नीचे दी गयी समस्याओं में से कुछ समस्याएं उभर सकती हैं:

- अपने ऊपर कम ध्यान देना, व्यक्तिवादी / आत्म–केंद्रित बनना, किसी एक व्यक्ति द्वारा देखभाल और बातचीत से बच्चे को अपनापन तथा सुरक्षित महसूस करने में दिक्कत होती है।
- "मल्टीपल मदरिंग सिन्ड्रोम" – जब एक बच्चे की देखभाल बार–बार बदलने वाले कर्मियों द्वारा की जाती है तब बच्चे का किसी एक कर्मी से लगाव नहीं बन पाता। इसके फलस्वरूप बच्चे में भावनात्मक एकाकीपन और असुरक्षा की भावना अत्याधिक बढ़ जाती है।
- अधिक नियमितीकरण और नियम पालन में बच्चों की व्यक्तिगत आवष्यकताओं का ध्यान नहीं रखा जाता जिसके कारण बच्चे या तो चुप रहते हैं और दब्बू प्रकृति के हो जाते हैं या विद्रोह तथा विरोध की प्रतिक्रिया कर सकते हैं।
- दीर्घकालीन एवं, अर्थपूर्ण संबन्ध बना पाने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चे को अधिकारियों तथा हमउम्रों पर भी विष्वास करने में दिक्कत होती है और वह खास कर तब, जब उसने अनेक नकारात्मक अनुभवों का सामना किया हो। अनेक अध्ययनों में देखा गया है कि यह नकारात्मकता वयस्क होने के बाद भी जारी रहती है और संस्थान छोड़ने के बाद ऐसे बच्चे समाज में ठीक से जुड़ नहीं पाते।
- मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और पोषण सम्बन्धी कमियों के कारण बच्चों का शैक्षणिक परिणाम तथा अन्य व्यवहारगत स्थितियां दयनीय रहती हैं।
- 'Institutionalised Child Syndrome' (बच्चों में संस्थागत लक्षण) कभी–कभी बच्चे के आत्मविष्वास में भी दिखता है। कुछ बच्चों में अपने जीवन का कोई महत्व नहीं होता है, जो बाद में उनके अन्तर्वैयक्तिक संबन्धों की समस्याओं में दिखाई दे सकता है।

**संस्थागत देखरेख– अन्तिम विकल्प क्यों**

आईए स्क्रीन पर इस चित्र को देखें जो बच्चे के लम्बे समय तक संस्थान में रहने के कुछ विपरीत प्रभावों को दर्शा रहा है इसमें शामिल हैं:

- भावना विहीनता
- मातृ विहीनता
- गुमनामी तथा व्यक्तिगत ध्यान का अभाव
- अलग रहने की बेचैनी
- आत्म सम्मान में कमी
- भरोसा करने में असफलता
- समाज में एकीकरण तथा जुड़ने में कठिनाई
- आपसी सम्बंधों में समस्या
- अत्यधिक नियमितीकरण और नियमन
- विकास में देरी

अब जब हम यह समझ चुके हैं कि संस्थागत देखरेख अंतिम विकल्प होना चाहिए तब हम आगे कैसे बढ़ें?

राष्ट्रीय नीतियों के प्रतिमानों में भी, बच्चों की देखभाल के लिए परिवारों को सषक्त बनाने और संरक्षण प्रदान करने के कार्यक्रमों में बदलाव दिख रहा है।

सम्भवतः कुछ बच्चों की ऐसी स्थितियां होंगी जिनके लिए संस्थागत देखरेख के अलावा अन्य कोई दूसरा रास्ता नहीं होगा, इसलिए वर्तमान में चलाए जा रहे संस्थानों में इस तरह सुधार लाना होगा कि बच्चों को व्यक्तिपरक गुणवत्तापूर्ण देखरेख सेवाएं दी जा सकें और उनके अधिकारों की रक्षा की जा सके।

जोखिम वाले परिवारों को व्यापक सहयोग देने के लिए कदम उठाना होगा ताकि संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार सम्मेलन के अनुच्छेद 18 और 27 के आलोक में, उन परिवारों को बच्चों के पालन की जिम्मेदारियों में सहायता दी जा सके।

जब अन्य विकल्पों की तलाष की जा रही हो उस दौरान अल्पकालीन संस्थागत देखरेख पर विचार किया जा सकता है।

बड़े संस्थानों के स्थान पर छोटे व्यक्तिपरक 'समूह गृह' के लिए मार्ग खोजना होगा जो और परिवार की तरह पालन कर सके।

'कल्याण' के स्थान पर 'विकासात्मक', 'आवष्यकता' के स्थान पर 'अधिकार' और 'संस्थागत देखरेख' से 'गैर संस्थागत वैकल्पिक देखरेख' के विषिष्ट बदलते प्रतिमानों की आवष्यकता 'जोखिम वाले परिवारों' तथा देखरेख व संरक्षण के लिए ज़रूरतमंद  बच्चों के लिए जरूरी है।

संयुक्त राष्ट्र के वैकल्पिक देखरेख के दिषानिर्देष औपचारिक देखभाल के लिए लागू होगा (नातेदारों द्वारा देखभाल, पालक देखभाल, परिवार आधारित देखभाल के अन्य तरीके, आवासीय देखभाल, पर्यवेक्षण के अधीन स्वतंत्र निवास) और अन्य स्थितियों में देखभाल (बोर्डिंग स्कूल, अस्पताल, विकलांगता वाले बच्चों के केन्द्र आदि) को भी प्रोत्साहित करता है।

यद्यपि यह उन बच्चों पर लागू नहीं होगा जो स्वतंत्रता से वंचित हैं, दत्तकग्रहण में दिए गए हैं, और अनौपचारिक व्यवस्था में रह रहे हैं।